ना धन्यनादेनिंदु
ना धन्यनादेनिंदु सत्यबोधरायर दिव्य पादपदुम कंडु ॥प॥
हिंगुववखिळ दोषंगळु ई मुनि पुंगवरंफ्रि संदरुशनदि ।
गंगादि मोदलाद मंगळ युतवाद ।
तुंगयाअत्रेय फल ता समवऐनिसुत ॥1॥
आव मुनिगळो मत्ताव देवतेगळो ।
अवरु बल्लरु इवर महिमे
सेविप सुजनर कृपावलोकनदिंद
पावन माडुव कोविदार्यर कंडु ॥२॥
सीतारमण जगन्नाथ विठलरेय भूतळदोळु ई महात्मरन्नु
प्रीतियिं सृजसिरलु जगदि जीवर । पुनीतरनु माडुवरादुदके ई क्षणदि ॥३॥